

श्री महावीर प्रसाद का जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व की प्रासंगिकता
सोनाली बुधौलिया
शोधार्थी, हिन्दी, जीवाजी
विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
Paper Received date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI
<https://doi.org/10.5281/zenodo.15041586>
शोध सार

ज्ञान की महिमा अपरम्पार है। भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है कि समस्त यज्ञों में ज्ञान यज्ञ सर्वोत्तम है। संसार सागर के संतरण में ज्ञान-नौका ही सर्वाधिक उपयोगी है, इसलिए ज्ञान-साधना सभी के लिए अपेक्षित है। ज्ञान के विभिन्न रूपों के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के साधन भी अनेक हैं। ज्ञान-प्राप्ति के लिए श्रद्धा, भक्ति, विश्वास, आस्था आदि परमावश्यक हैं, क्योंकि श्रद्धावान लभते ज्ञान, किन्तु आधुनिक परिवेश में, इल गुणों के साथ ही शिक्षार्जन भी आवश्यक है। कहना चाहिए विद्यावान लभते ज्ञान।

डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया का जन्म ग्राम बसंतपुरा, तहसील रौन, जिला भिण्ड म.प्र. में 22 जून 1935 ई. में हुआ है। मनुष्य ईश्वर की सबसे सुन्दर कृति है। अपने जीवन को किसी भी विधा में डाल सकता है। जो साहित्यकार के लिए एक स्थिति और गति है, जिसके द्वारा साहित्यकार समाज में प्रबोधिनी का कार्य करता है।

विनोदप्रियता, कलात्मक प्रतिभा और मानवीय गुणों के कारण वे सबका मन सहज भाव से अपनी ओर खींच लेते थे। किसी का दुःख तो वह देख ही नहीं सकते थे, उनके सेवाभाव को प्रेरित करने के लिए यह कतई जरूरी नहीं या उत्त नैतिक संस्कारों की नींव डाली उन्हें प्रेम, सहृदयता का पाठ पढ़ाया। बचपन में कमाई गई यह नैतिक पूँजी ही आगे चलकर उनके साहित्य की सुदृढ आधारशिला बनी है। मुख्य बिन्दु- ज्ञान- साधना, ज्ञान-प्राप्ति, श्रद्धा शिक्षार्जन, सेवाभाव, सहृदयता

IMPACT FACTOR
5.924



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

महावीर प्रसाद चंसौलिया के पुत्र एवं पुत्रियों की संख्या 5 जिसमें डॉ. अवधेश कुमार चंसौलिया, प्राध्यापक हिन्दी, श्री संतोश चंसौलिया दुकानदार, श्रीललित चंसौलिया, श्री पंकज चंसौलिया एवं पुत्री श्रीमती जयंती चंसौलिया डॉ. चंसौलिया के पिता श्री पन्नालाल चंसौलिया एक जमींदार थे उनके सबसे पड़े बेटे श्री कृष्ण प्रसाद, इसके बाद श्रीउमा शंकर थे जो अब नहीं हैं। इनकी दो बहनें थीं जिनके नाम गंगा और त्रिवेणी थे।

(ब) शिक्षा-दीक्षा-

डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया का नाम लेते ही भारतीय संस्कृति की एक जगमगाती मूर्ति सामने खड़ी हो जाती है मनसा, वाचा, कर्मणा वे भारतीय संस्कृति के साक्षात् रूप हैं। सुदर्शन, सौम्य रूप है यह। ऐसा रूप जो सहज है, स्वाभाविक है। उनके विचारों के मिश्रण, आडम्बर, प्रपंच, एवं प्रदर्शन नहीं है। आसन असन बसन में सर्वत्र निर्मल विवेक की छाप। मिताचार, रहनि-व्वनि- बोलनि सुसंस्कृत, सुरुचिपूर्ण, मधुर मोहन। यह ओदा हुआ, आरोपित रूप नहीं है। मुखौटा उनकी प्रकृति के विरुद्ध है। अन्तर्बाह्य एक भीतर आन, बाहर आन आन विरुद्ध है। वे संस्कृतनिष्ठ, आध्यात्मिक और आस्थावान पुरुष हैं।

डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया जी ने औपचारिक शिक्षा मात्र हाई स्कूल तक प्राप्त की किन्तु स्वाध्याय द्वारा उन्होंने साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान आदि विषयों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया तथा गुजराती व हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी बंगला, मराठी आदि भाषाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया है। (1)

(स) विवाह एवं नौकरी-

विवाह पारिवारिक जीवन की आधारशिला है जिसकी नींव सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। विवाह सामाजिक दृष्टि से करार है और धार्मिक दृष्टि से एक संस्कार है। कामवासना की पूर्ति एवं संतान प्राप्ति के लिए समाजमान्य पद्धति के रूप में विवाह को स्वीकार किया है। स्त्री-पुरुष के दाम्पत्य जीवन के सूत्र में बाँधने वाली रीति को विवाह माला है। भारतीय समाज में विवाह को सोलह संस्कारों में से एक माना जाता है।



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इसे तोड़ना उचित नहीं माना जाता है। वैदिक विवाह, गांधर्व विवाह, प्रेम विवाह, बाल विवाह, बहु विवाह एवं अनमेल विवाह आदि विवाह की कई प्रयाँ और प्रकार हैं। विवाह गृहस्थ जीवन का प्रवेश द्वार होने के कारण भारतीय संस्कृति में विवाह का अनन्य साधारण महत्त्व है। विवाह संस्कार वैदिक शास्त्र के अनुसार करने के लिए विवाह के पूर्व और विवाहोत्तर जिस अनुष्ठान को तथा पूजाविधि को संपन्न किया जाता है। महावीर प्रसाद चंसौलिया कि ससुराल गोवरधनपुरा जिला जलौन उ.प्र. में है, जिनके ससुर का नाम पं. चुन्नीलाल बुधौलिया जो ग्राम प्रधान के पद पर रहे हैं। वे कर्मकाण्ड और पाण्डित्य मे ज्ञान में विशेष रुत्ति रखते थे। उनके दो पुत्र है ज्ञान मोहन एवं हरी मोहन है। डॉ. हरीमोहन बुधौलिया हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के रहे है। (2)

डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया की पत्नी का नाम श्रीमती दयाला देवी चन्सौलिया है जो आदर्श गृहणी के रूप में जानी जाती रही है। उनका व्यक्तित्व, सुन्दर स्वच्छ एवं पारदर्शी रहा है। डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया दो विभागों से जुड़े हुये, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक एवं चिकित्सक है।

(द) व्यक्तित्व के घटक-

डॉ. चंसौलिया बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार है। उन्होंने अपनी गद्य एवं पद्य शैली के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को इन्द्रधनुष की सतरंगी आभा से दीप्तिमान किया है। डॉ. चंसौलिया के व्यक्तित्व की पूर्णता उनके बहुरंगी व्यक्तित्व पर आधूत है वे एक श्रेष्ठ साहित्यिकार चिंतक, विचारक, कवि एवं समाज सेवक है। वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति को अपने चिंतन के माध्यम से उसे महीमा मण्डित किया है जिसमें मानवतावाद एवं मनोविज्ञान का समजस्य स्वरूप दिखलाई पड़ता है।

उन्होंने उत्सव प्रधान भ्रष्ट राजनीति, सामाजिक विद्रूपताओं, प्रशासनिक विसंगतियों, सांस्कृतिक पतन, रूढ़ परम्पराओं और मानवीय दुर्बलताओं के विरुद्ध अपने आक्रोश को मुस्कुराहटों में बाँधकर अत्यन्त जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया है।

मनुष्य को अपनी जिस समस्या का निदान जाग्रत अवस्था में प्राप्त नहीं हो पाता वह उसे स्वप्नावस्था अथवा स्वप्नकाल में प्राप्त हो जाता है। वैज्ञानिकों, गणितज्ञों, कवियों एवं मूर्तिकारों आदि को अपनी अपनी समस्याओं का निदान प्रायः स्वप्न में ही मिल जाता है। अब प्रश्न उठता है कि क्या सभी स्वप्न मूर्तरूप



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

में परिणित हो जाते हैं या सत्य सिद्ध होते हैं। यह स्वप्न दर्शी की मानसिकता स्थिति काल परिस्थिति आदि पर निर्भर होता है। मनुष्य हजारों प्रकार के स्वप्न देखता है जिनमें से कुछ शुभ और मंगलकारी होते हैं और कुछ अनिष्ट और अमंगलकारी होते हैं।

मंगल सूचक स्वप्न के दिखने पर हमें क्या सावधानी वर्तनी और अमंगल सूचक स्वप्न के दिखने पर उसके प्रभाव से बचने के लिए क्या करना चाहिए। इन्हीं सारी समस्याओं का निदान इस कृति में दिया गया है। रचनाकार ले सामान्य स्वप्न शुभ-अशुभ प्रेम सम्बन्धी एवं अत्यन्त अशुभकारी स्वप्नों का विस्तार से वर्णन किया है। कदाचित ही कोई स्वप्न ऐसा रह गया हो जिसे इस कृति में स्थान न दिया गया हो।

जितना महत्वपूर्ण स्थान हमारे जीवन में स्वप्नों का है उतना ही शकुलों का जनमानस में स्वप्न फलों की ही भाँति शकुन फलों की भी पुरातलकाल से मान्यता रही है जिस प्रकार स्वप्नों के तार भविष्य में घटले वाली घटनाओं से जुड़े रहते हैं उसी प्रकार शकुलों के भी। किसी भी शुभकार्य और यात्रा के पूर्व शकुन विचार को महता को नकारा नहीं जा सकता है। इन शकुलों में कुछ शुभ और कुछ अशुभ सूतक शकुल होते हैं। इल शकुन वित्तारों में पशु पक्षियों, जीव जन्तुओं और मानव समुदाय की कृतियों और विकृतियों को लिया जाता है। यही नहीं कुछ दृश्यों और वस्तुओं के आधार पर भी शकुल फलों की घोषणा की जाती है। (3)

शकुन विचार के अन्तर्गत पशुओं में गाय बछड़ा श्वान, बिल्ली, सियार सुअर, बन्दर, बैल, भैंस, भेडिया, हिरण, गर्भव (गधा) तथा पक्षियों के अन्तर्गत मोर कोयल, पपीहा, मुर्गा, कौया, गौरैया, नीलकण्ठ, चील, कबूतर उल्लू आदि को स्थान दिया गया है। इनकी बोलियों और क्रियाकलापों के आधार पर ही शुभ या अशुभ शकुन का वित्तार किया जाता है। इसी प्रकार मानव समुदाय की स्थिति भी विचारणीय होती है। सरीसृप वर्ग में छिपकली गिरगिट, नेवला, सर्प एवं नेटक आदि के पतन और क्रियायों को आधार मानकर शकुल फल की घोषणा की जाती है। शुभ शकुन फलों में, मछली, दूध दही चावल एवं जल पूरित घट आदि वस्तुओं को मंगल सूतक माला जाता है। कुछ ऐसे शकुन भी होते हैं जो केवल अशुभ सूचक हो होते हैं इनका उल्लेख भी इस कृति में विस्तार से किया गया है।



(य) साहित्यिक उदय की पृष्ठभूमि-

सृजन के मूल में कतिपय प्रेरणाएं अन्तलिहित होती हैं जो रतनाकार को सृजनशील बना देती हैं। ये प्रेरणाएं जन्मजात संस्कारों, परिवेश और परिस्थितियों के प्रभावों, विभिन्न व्यक्तियों द्वारा दिये गये सुझावों व उपदेशों के रूप में क्रियाशील रहती हैं और जाने-अनजाने ही व्यक्ति के भीतर बाली अमूर्त कला को मूर्तियन्त कर देती हैं। नागर जी का जन्म जिस परिवार में हुआ, जिन परिस्थितियों में जिस परिवेश में उनका बचपन बीता, उन्होंने ही उनमें भावी लेखकीय जीवन के संस्कारों को बीजारोपित किया ।

डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया ने अपने विचारों को गद्य एवं पद्य दोनों के माध्यम से व्यक्त किया है। अधिकतर उनके विचारों में मानव के कल्याण के विषयों को व्यक्त किया है, जिससे आगे आने वाली पीढ़ी के लिए एक नया मार्गदर्शन मिल सके।

महावीर प्रसाद चंसौलिया एक सहृदय एवं बहुमुखी रचनाकार हैं। आपने अनेक विषयों पर अपनी लेखनी चलाकर समाज उपयोगी कृतियों का प्रणयल किया है । आपने जहाँ रामचरित मानस पर आधारित शोधपूर्ण कृति की रचना की है तो वहीं ज्योतिष दोहावली जैसी कृति रचकर ज्योतिष जैसे कठिन और श्रम साध्य विषय को सरस काव्य शैली में प्रस्तुत कर अभूतपूर्व ख्याति अर्जित की है। काव्य सुधा कृति में आपने जहाँ समाज राष्ट्र के विद्रूप चित्रों का उद्घाटित कर अपने सत्ते कवि धर्म का निर्वाह किया है तो वहीं दोहा मुक्तक मञ्जरी कृति में समाज मालय जीवन ज्योतिष, बुन्देली संस्कृति, श्रृंगार, नीति, राजनीति, आयुर्वेद, भ्रूण हत्या जैसे विषयों को विषय वस्तु बनाया है स्वप्न और शकुल विचार आपकी पाँचवी कृति है जिसमें आपने स्वप्नों और शकुलों को उनके फलों सहित काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत कर एक अभिनन्दनीय कृत्यकार जनमानस को एक उपयोगी कृति प्रदान की है।

इस कृति में लेखक (रचनाकार) चंसौलिया ने बड़ाश्रम किया है। कृति की रचना के पूर्व कृतिकार ने अनेक विद्वानों की कृतियों का विशद अध्ययन कर विषय को सरस और हृदयंगम बनाने की पूरी कोशिश की है। कृतियों में कृतिकार ने सर्वप्रथम स्वप्न और तत्सम्बन्धी फलों तथा इसके उपरान्त शकुल और उनके फलों को रखा है। वास्तव में कृति अपने आप में एक अनूठी कृति बल पड़ी है। इस कृति की सबसे बड़ी



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

विशेषता तो ये है कि इसमें जिस विषय वस्तु को स्थान दिया गया है। उसे दोहा जैसे लोकप्रिय छन्द में प्रस्तुत किया गया है जिसे पाठकगण बड़ी सहजता के साथ आत्मसात कर सकते हैं।(4)

कृति के परिचय के पश्चात थोड़ा आलोक स्वप्न अवस्था पर डाल दिया जाए ताकि हमारे पाठकगण इस विषय से भली-भाँति परिचित हो सकें। स्वप्न मनुष्य के निद्राग्रस्त विषयानुभव का नाम है। निद्रा में स्वप्नों का होना स्वाभाविक है। मनुष्य अपने विचारों पर जाग्रत अवस्था में नियंत्रण रखले में समर्थ रहता है किन्तु वह स्वप्नों को अपनी इच्छा के अनुसार देखने में असमर्थ रहता है। शयलावस्था मस्तिष्क की गतिविधि किसी निर्देशन या नियंत्रण के बिना भी गुप्त रूप से चलती रहती है। स्वप्न में व्यक्ति प्रायः ऐसी स्थितियों तक चला जाता है। जिनसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता।

मनुष्य जिन स्वप्नों को देखता है वे इतने सजीव होते हैं कि मानस पटल पर उनका चित्र अमिट रूप से अंकित हो जाता है। ड० धीरेन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित हिन्दी साहित्य कोष में स्वप्नावस्था पर विस्तार से चर्चा की गई है। इस ग्रंथ के अनुसार स्वप्न एक मानसिक अवस्था है जो निन्द्राग्रस्त होने पर ही घटित होती है। स्वप्नों के दो पक्ष होते हैं प्रकट अन्तर्वस्तु और अन्तर्वस्तु प्रकट अन्तर्वस्तु के अन्तर्गत वे समस्त मालस प्रतिभाएँ निकलती हैं। जिनसे दिखाई देने वाले स्वप्नों का निर्माण होता है। अन्तर्वस्तु में वे वित्तर इच्छाएँ और प्रेरणाएँ होती हैं, जिनको स्वप्न प्रच्छन्न रूप से व्यक्त करता है। स्वप्न की प्रक्रिया द्वारा गुप्त अन्तर्वस्तु प्रकट अन्तर्वस्तु के रूप में परिणित हो जाती है। इस प्रकार प्रत्येक स्वप्न इच्छा पूर्ति का साधन होता है।

(र) पारिवारिक परिवेश

(ल) साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्धता एवं सम्मान / पुरस्कार / गोष्ठियाँ आदि

- महिमा साहित्य भूषण सम्मान महिमा प्रकाशन दुर्ग (छ.ग.)
- भरान्ति अलंकार साहित्य मंच कुम्हारी (छ.ग.)
- महिमा साहित्य मणि सम्मान महिना प्रकाशन गयालगर दुर्ग (छ.ग.)
- घरा कबीर सम्मान एवं साहित्य अलंकरण साहित्य मंच कुम्हारी दुर्ग (छ.ग.)
- काव्य रत्नाकर सम्मान राष्ट्रीय चिंतन साहित्य समित टीकमगढ़ (म.प्र.)



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- श्री राम कृष्ण कला साहित्य सम्मान इन्द्रधनुष साहित्य संस्था धामपुर • कवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर सारस्वत साहित्य सम्मान भारतीय वायू अलीपुर बंगाल
- बुंदेलीरत्न सम्मान अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद उरई जालौन (उ.प्र.)
- न्यू ऋतंभरा तुलसी दास सम्मान न्यू ऋतंभरा साहित्य मंच कुम्हारी, दुर्ग (छ.ग.)
- काव्य रत्नाकर सम्मान चकरपुर जिला छतरपुर (म.प्र.)
- कबीरदास सम्मान कुम्हारी जिला-दुर्ग (छ.ग.)
- साहित्य के सितारे सम्मान कुम्हारी जिला-दुर्ग (छ.ग.)
- सूरदास सम्मान ऋतंभरा साहित्य मंच (छ.ग.)
- ज्योतिष रत्नाकर सम्मान परियावां जिला प्रतापगढ़ (उ.प्र.)
- रवीन्द्रनाथ टैगोर साहित्य सम्मान जिला दुर्ग (छ.ग.) 16. साहित्य शिरोमणि सारस्वत सम्मान भारतीय वाङ्मय पीठ कोलकाता
- पं. कामता प्रसाद गुरु सारस्वत सम्मान भारतीय वाङ्मय पीठ कोलकाता
- ज्योतिष मार्तण्ड सारस्वत सम्मान भारतीय वाङ्मय पीठ कोलकाता
- साहित्याचार्य अलंकरण परियावां, जिला प्रतापगढ़ (उ.प्र.)
- रज्जन सम्मान, राजेन्द्र रज्जल साहित्यिक समिति, डबरा, जिला ग्वालियर (म.प्र.)
- ज्योतिष शिरोमणि मानसेवी उपाधि विक्रम शिला हिन्दी विद्यापीठ, गान्धी नगर, ईशापुर, भागलपुर, बिहार

(ख) कृतित्व एवं साहित्यिक व्यक्तित्व-

समाज जीवन के विकास के साथ लये पुराने विचार, प्रथा, पद्धतियों में टकराहट निर्माण होती है। इसी से सामाजिक समस्याओं का निर्माण होता है। अर्थात् विकास का प्रवाह किसी रुकावट के कारण बाधित होता है तभी समस्या निर्माण होती है। मालय समाज में सामंतवादी समाज व्यवस्था पर पूँजीवाद और साम्राज्यवाद के आक्रमण ने सामान्य जनता की रीढ़ ही तोड़ दी। अंग्रेजों के आगमन के बाद नये विचार और नयी संस्कृति ने भारत की सम्पूर्ण समाज व्यवस्था को जड़ से हिला दिया।



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संदर्भ सूची

1. चंसौलिया महावीर प्रसाद, रामचरितमानसः एक नई दृष्टि जलता ऑफसेट प्रिंटर्स, ग्वालियर संस्करण प्रथम, पृ. 24
2. चंसौलिया महावीर प्रसाद, महावीर ज्योतिष दोहावली, ग्वालियर साहित्य अकादमी ग्वालियर संस्करण प्रथम, पृ. भूमिका
3. चंसौलिया महावीर प्रसाद, महावीर दोहा मुक्तक- मंजरी, ग्वालियर साहित्य अकादमी व्यालियर संस्करण 2010. पृ. 7
4. चंसौलिया महावीर प्रसाद, महावीर दोहा मुक्तक- मंजरी, ग्वालियर साहित्य अकादमी ग्वालियर संस्करण 2010. पृ. 14